अशोक की चिंता

जलता है यह- न उठे उमंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इस कविता में जब सम्राट अशोक कलिंग पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब उसे कलिंग विजय में भीषण नर-संहार को देखकर सम्राट अशोक को बहुत विरक्ति हुई। इस विरक्ति की भावना के कारण अशोक चिन्ता में डूब जाता है।

व्याख्याः- प्रसाद जी इन पंक्तियों के माध्यम से सम्राट अशोक की व्यथा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह सोचता है कि यह जीवन पतंगे के समान जलता है। जीवन का समय बहुत थोड़ा है। जीवन के बहुत ही अल्प क्षण हैं। ये क्षण पतिंगों के कण-कण के समान है। तृष्णा (लालसा) अग्निशिखा (दीपक की ज्योति) यौवन दिखलाती है। अर्थात् पूर्ण विकास के समान जलती है। ऐसी अग्निशिखा को देखकर जीवन रूपी पतिंगे के मन में जलकर झुलसने की उमंग क्यों न उठे।

विशेषः- 1. इस कविता में कवि ने मनुष्य के जीवन को पतंगे के समान जलने का वर्णन किया है।

2. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
3. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
4. अलंकार-रूपक अलंकार।
5. रस- करुण रस।
6. छंद- मुक्तक छंद।
7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

है ऊँचा आज मगध - विजयी का अभिमान भंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘काव्य मधुवन’ के ‘अशोक की चिन्ता’ नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह ‘लहर’ से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि ‘जयशंकर प्रसाद’ हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें सम्राट अशोक की विजय व कलिंग राज्य की पराजय का वर्णन करते हैं। उनके कानों में पराजित सैनिकों की कराहों की आवाज सुनाई दे रही हैं।।

व्याख्याः- आज मगध राज्य का मस्तिष्क स्वाभिमान से ऊँचा है। शत्रु पराजित होकर पैरों पर पड़ा है। अर्थात् शत्रु ने पूर्णरूप से हथियार डाल दिए हैं।) तब दूर से आने वाली रोने की आवाज कानों में क्यों गूँज रही है? यह आवाज अस्थिर है अर्थात् काँप रही है। इस आवाज को सुनकर अशोक का विजय का अभियान भंग हो रहा है।

विशेषः- 1. अशोक के कानों में हारे हुए दल के सैनिकों के परिवारों की शोक ध्वनि आ रही है। यह ध्वनि इतनी हृदय विदारक है कि उसे सुनकर अशोक का हृदय कहता है कि हे अशोक तेरा अभिमान व्यर्थ है। तूने युद्ध क्षेत्र में तो शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली किन्तु यह यथार्थ विजय नहीं है।

2. इस कविता में कवि ने मनुष्य के जीवन को पतंगे के समान जलने का वर्णन किया है।

3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।

4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।

5. अलंकार-रूपक अलंकार।

6. रस- करुण रस।

7. छंद- मुक्तक छंद।

8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

इन प्यासी तलवारों से -आज हुआ कलिंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ‘काव्य मधुवन’ के ‘अशोक की चिन्ता’ नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह ‘लहर’ से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि ‘जयशंकर प्रसाद’ हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें सम्राट अशोक की विजय व कलिंग राज्य की पराजय का वर्णन करते हैं। उनके कानों में पराजित सैनिकों की कराहों की आवाज सुनाई दे रही हैं।।

व्याख्याः- कवि अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहते है कि अशोक का मानना है कि कलिंग का मस्तक आज खून की प्यासी तलवारों से, तलवारों की पैनी धारों से निर्दयता पूवर्क चलाई जाने वाली तलवारों की चोटों से, हिंसा करने वाली ऊँची आवाजों से हार कर झुक गया है। यह विजय हिंसा की विजय है। अर्थात् अशोक ने कलिंग पर विजय तो हासिल कर ली किन्तु कलिंग की प्रजा के हृदय को नहीं जीत सका।

विशेषः- 1. अशोक के कानों में हारे हुए दल के सैनिकों के परिवारों की शोक ध्वनि आ रही है। यह ध्वनि इतनी हृदय विदारक है कि उसे सुनकर अशोक का हृदय कहता है कि हे अशोक तेरा अभिमान व्यर्थ है। तूने युद्ध क्षेत्र में तो शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली किन्तु यह यथार्थ में विजय नहीं है।

2. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
3. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
4. अलंकार-रूपक अलंकार।
5. रस- करुण रस।
6. छंद- मुक्तक छंद।
7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

यह सुख कैसा -किरणों का प्रसंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें सम्राट अशोक की विजय व कलिंग राज्य की पराजय का वर्णन करते हैं। फिर भी यह युद्ध जैसी बिभीषिका मानवता के लिए बहुत ही घातक है।

व्याख्याः- कवि अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहते है। कि अशोक सोचता है कि 'शासन का यह सुख कैसा है? इस शासन में सच्चा सुख नहीं है। इसमें तो मानव मन

पर शासन करना पड़ रहा है। (मानव का मन स्वतंत्र होना चाहिए। उस पर शासन न्याय संगत नहीं) यह भाव बहुत ही साधारण है फिर भी यह उतना ही भारी और दुखदायी है जितना कि तिनका पर्वत के समान भारी लगे। घटा के कारण छाया हुआ अंधकार केवल दो दिन का है, पुनः सूर्य और चन्द्रमा का प्रसंग आरंभ हो जाएगा अर्थात् माया-मोह के कारण छा जाने वाला अंधेरा केवल दो दिन का ही है, फिर तो वास्तविक प्रकाश का उदय होगा। मेरे मन में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने अशोक की मनःस्थिति का वर्णन किया है।

2. इस कविता में कवि ने मनुष्य की तुच्छ महत्वकांक्षा का चित्रण किया है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- वर्णनात्मक शैली।
5. अलंकार-रूपक अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

यह महादम्भ का- -पराजय का कुढंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें सम्राट अशोक की विजय व कलिंग राज्य की पराजय का वर्णन करते हैं। उनके कानों में पराजित सैनिकों की कराहों की आवाज सुनाई दे रही हैं।।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सम्राट अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते है, वे बताते हैं कि अशोक को आत्मग्लानि होती है कि यह युद्ध और यह रक्तपात दानव का खेल है मानव का नहीं। महान झूठे गर्व से भरा हुआ दानव जोकि कामवासना की मदिरा पाकर ज्ञानान्ध होने के कारण युद्ध भूमि 'महा भीषणरव' कर चुका है, अर्थात् मरने वालों की चीत्कारें

उत्पन्न कर चुका है। हे दानव! अब तू मानव बनकर अपनी दानवी प्रवृत्ति छोड़ प्राणीमात्र को सुख दे। युद्ध में विजय और पराजय का ढंग कुढंग है, इसे छोड़ दे।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने अशोक के मन में युद्ध से वितृष्णा का वर्णन किया है।

2. मनुष्य को युद्ध जैसे कार्यों से दूर रहने का वर्णन किया है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार-रूपक अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

संकेत कौन दिखलाती- -थिरकते हैं तुरंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें युद्ध की स्थिति के परिणामों का वर्णन करते हैं।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सम्राट अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते है, वे बताते हैं कि नश्वरता जब अपना गीत सुनाने लगती है, जब विनाश का तांडव आरंभ हो जाता है, तब कौन सा संदेश पाकर राजमुकुट सहज ही में धरती पर आ गिरते हैं? गले पड़ी हुई जयमाला सूख जाती है। तब अश्वों का थिरकना भी बन्द हो जाता है। युद्धभूमि में तबतक एक भी घोड़ा युद्धातुर होकर नहीं थिरकता।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने युद्ध की विनाशलीला के परिणामों का चित्रण किया है।

2. कवि युद्ध की भयावहता का यथार्थ चित्रण करने में सफल हुए हैं।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार-रूपक अलंकार।

6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

वैभव की यह - चल रहा राग-रंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें मनुष्य का थोथा दम्भ और उसकी महत्वाकांक्षा का वर्णन करते हैं।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सम्राट अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते है, वे बताते हैं कि यह संसार एक मधुशाला के समान है। यह मधुशाला वैभव, सम्पन्नता की मधुशाला है। इस वैभव का पान कर जग पागल हो जाता है। जिस प्रकार आदमी मदिरा पीकर गिरता/उठता आर मतवाला हो जाता है। उसी प्रकार इस वैभव को भी पानकर मनुष्य की दशा होती है। ऐसी दशा होने के बाद भी मनुष्य की तृष्णा (प्यास) नहीं बुझती। वैभव के लिए वह फिर व्याकुल होता है। इस प्रकार का क्षणभंगुर राग-रंग इस संसार की मधुशाला में चलता ही रहता है।

विशेषः- 1. इसमें कवि संसार की महाशक्तियों के झूठे दम्भ का वर्णन कि, है।

2. मनुष्य अपने काल्पनिक सुखों के लिए मानवता का गला घोटने में भी नहीं हिचकते।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार- अनुप्रास और रूपक अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

काली-काली अलकों - क्षण-भंगुर है तरंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें मिथ्या और क्षणिक काल्पनिक सुखों के लिए मनुष्य किस सीमा तक जा सकता है, उसका वर्णन करते है।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सम्राट अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते है, वे बताते हैं कि यह संसार ऐसा है कि यहाँ मनुष्य काली-काली अलकों में (मदिरापान करने के कारण) आलस और मद से झुकने वाली पलकों में मणि और मोती की झलक में उन्हें देखकर काल्पनिक सुख की लालसा में क्षणभर के लिए फँस जाता है। इन मिथ्या और क्षणिक काल्पनिक सुखों के प्रति मन में पलभर के लिए लहरें उठती ही हैं।

विशेषः- 1. कवि ने इसमें मनुष्य का सांसारिक प्रलोभनों के प्रति संकेत किया है।

2. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
3. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
4. अलंकार- अनुप्रास और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
5. रस- करुण रस।
6. छंद- मुक्तक छंद।
7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

फिर निर्जन -न वहाँ मृदंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- इसमें कवि युद्ध के परिणामों का वर्णन करते हैं कि युद्ध के बाद देश की प्रगति बहुत धीमी हो जाती है। मनुष्यों को फिर से खुशहाली के लिए बहुत प्रयास करने पड़ते हैं।

व्याख्या- कवि इन पंक्तियों में सम्राट अशोक की मनःस्थिति का वर्णन करते है, वे बताते हैं कि इस संसार की उत्सवशाला से फिर निर्जन हो जाती है अर्थात् यहाँ कोई भी जीवित नहीं रहता। नूपुर मौन हो जाते है, माला टूट जाती है। मधुवाला (मधुशाला में मधु/सुरा वितरित करने वाली बालिका) सो जाती है। वह मधु (सुरा) बाँटना बंद कर देती है। प्याला सूखकर एक ओर पड़ा रहता है। न तो वीणा के स्वर सुनाई देते है और न मृदंग ही बजता है।

विशेषः- इसमें कवि ने उत्सव के सब साज समाप्त होने का यथार्थ वर्णन किया है।

2. युद्ध के बाद सब खुशियां समाप्त हो जाती हैं।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार-अनुप्रास और रूपक अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

इस नील विषाद - मन कुरंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें मनुष्य की महत्वाकांक्षा का वर्णन करते हैं कि उसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए नैतिक/अनैतिक कार्यों को करने में नहीं चूकता है।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि इस नीले गहरे विषाद के आकाश में (जीवन में आने वाला) सुख-दुख बादलों में बिजली के समान क्षणिक है। प्रत्येक नया मिलन चिर विरह को जन्म देने वाला है। यह संसार मरु-मरीचिका का वन है। (जिस प्रकार मरु-मरीचिका से प्यास नहीं बुझती उसी प्रकार इस संसार में भी मानसिक शांति नहीं मिलती। इसीलिए हे मनुष्य! तू यहाँ अपने मन के चंचल हिरन को मत उलझा।

विशेषः- 1. कवि इसमें संसार को मरु-मरीचिका की उपमा देते हैं।

2. मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूरा करने में हमेशा प्रयत्नशील रहता है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार-अनुप्रास और उपमा अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

आँसू कन-कन ले - का है निषंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- इन पंक्तियों में कवि समय की महत्ता का वर्णन करते है।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि समय की सरिता छल-छल करते हुए आँसू के कण से अपने दृगों से स्वयं का अंचल भर रही है। समय का प्रवाह दुःख के आँसुओं से भरपूर है। प्रत्येक प्राणी अपने में ही चंचल है। सूने पल छूट जाते हैं। समय बीत जाता है किन्तु काल का निषंग (तरकस) कभी खाली नहीं होता।

विशेषः- 1. कवि ने इसमें मनुष्य के सुखों और दुखों का वर्णन किया है।

2. प्रत्येक प्राणी पर समय का प्रभाव अवश्य पड़ता है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- वर्णनात्मक शैली।
5. अलंकार- अनुप्रास और पुनरुक्तिप्रास अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

वेदना विकल - कब से कुढ़ग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- इसमें कवि चेतन प्राणी भी इस संसार में व्यथित रहता है और जड़ प्राणी भी व्यथा से पीड़ित रहता है, का सजीव वर्णन करते हैं।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि यह चेतन प्राणी इस संसार में जो कुछ भी वर्तमान चेतन है, वह किसी न किसी वेदना के कारण व्याकुल है। यहाँ संसार में जड़ का पीड़ा के साथ नर्तन होता रहा है। इस संसार में जो चेतन नहीं जड़ है (यहाँ जड़ का तात्पर्य अज्ञानता से है) वह पीड़ा का साथी है, वह हमेशा दुखी रहता है। यह कम्पन, हमारे जीवन की साँसें जड़ और पीड़ा के नर्तन की लय की सीमा है। संसार में परिवर्तन के अनेक प्रकार के भाव दिखाई देते हैं। ऐसा बुरा ढंग न जाने कब से इस जगत् में चल रहा है।

विशेषः- 1. कवि ने मनुष्य की पीड़ा का यथार्थ वर्णन किया है।

2. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
3. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
4. अलंकार-अनुप्रास अलंकार।
5. रस- करुण रस।
6. छंद- मुक्तक छंद।
7. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

करूणा गाथा गाती- -संध्या सुरंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें प्रकृति का मानवीकरण रूप में वर्णन करते हैं। संसार के कार्यकलाप इसी प्रकार चलते रहते है।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि इस संसार में करूणा अपनी गाथा गाती रहती है। यहाँ करूणा का प्रभाव ही व्यापक है। यह हवा बही जा रही है। संसार के कार्य-कलापों की हवा इसी प्रकार बहती रहती है। ऊषा उदास होकर उदय होती रहती है और पीला मुख लेकर (उदास ही होकर) अस्त हो जाती है। अस्त होते समय ऊषा सन्ध्या का रंग लेकर अस्त हो जाती है। सन्ध्या का रंग मधु (सुरा) के समान पीला होता है।

विशेषः- कवि मनुष्य की उस व्यथा का वर्णन करते हैं जिसे वह लोगों को अपनी व्यथा रोते हुए सुनाने में सिद्धहस्त है।

2. इसमें कवि ने प्रकृति का सजीव वर्णन किया है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार-अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

अलोक किरन है - सो जाते विहंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें कवि मनुष्य की प्रसन्नता और पक्षियों के कलरव का सजीव वर्णन करते हैं।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि आलोक की किरणें (सूर्य की किरणें) उदित होती हैं; ऐसा लगता है कि मानो रेशम की डोर खिंच गई हो। इस

किरण के कारण आँखों की पुतली प्रसन्न होकर नृत्य करती है। यह किरण सन्ध्या काल में फिर अंधेरे के पट में छिप जाती है। सन्ध्याकाल के बाद पक्षी कलरव करते हुए सो जाते हैं।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने मनुष्य की प्रसन्नता का वर्णन किया है।

2. इस कविता में कवि ने हर्ष की सन्ध्या आने पर हमारी उमंगों के पक्षी कलरव कर (आनन्दित ध्वनि कर) सो जाते हैं।

3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- वर्णानात्मक शैली।
5. अलंकार- अनुप्रास अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

जब पलभर -सुमन रंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें मनुष्य के जीवन का पुष्प के माध्यम से यथार्थ चित्रण करते हैं।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि यह जीवन फूलों के समान है। फूल ही प्रातःकाल खिलता है और फिर मुरझाकर धूल में मिल जाता है। जब पलभर का मिलन और सदा के लिए वियोग होना है तब इन फूलों का रंग इतना चटकीला क्यों? जीवन रूपी फूल में फिर इतनी चमक होना निरर्थक है।

विशेषः- 1. इसमें कवि ने फूलों के माध्यम से मनुष्य जीवन का वर्णन किया है।

2. फूल की सुन्दरता का वर्णन में कवि ने इसमें बड़ी ही कुशलता से वर्णन किया है।

3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।

4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।
5. अलंकार- अनुप्रास और रूपक अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

संसृति के - मधुपान भृंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें जीव के संसार में आवागमन का वर्णन करते हैं।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि संसार में आवागमन का जो क्रम है वह अस्थिर और अनिश्चत है। संसृति डगमग गति से चल रही है। हे मनुष्य तू अनुलेप (उबटन) के समान इस संसृति में लगकर उसके मार्ग में मृदु मृदुल (सुख) विखेर दे। भृंग (मधुप) मधुर मधु का पान कर चुके अर्थात् विलास का समय अब व्यतीत हो चुका है।

विशेषः- 1. कवि ने इसमें संसार में जीव के आवागमन का सजीव वर्णन किया है।

2. मनुष्य को जीवन में कठिन परिश्रम करने के लिए कहा है।
3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।
4. शैली- संबोधन शैली।
5. अलंकार-अनुप्रास अलंकार।
6. रस- करुण रस।
7. छंद- मुक्तक छंद।
8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

भुनती वसुधा - करुणा की तरंग।

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य मधुवन' के 'अशोक की चिन्ता' नामक शीर्षक से अवतरित है। यह कविता प्रसाद जी के काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' हैं।

प्रसंगः- कवि इसमें संसार की समस्याओं का यथार्थ चित्रण करते हैं।

व्याख्याः- इन पंक्तियों में कवि अशोक के विचारों का वर्णन करते हैं कि इस संसार की ज्वाला में यह धरती जल रही है। पर्वत (नग) तप रहे हैं। सारा संसार दुःख है। इस संसार में प्रत्येक पग पर दुःख के काँटे बिछे हैं। इस संसार की राह जलती हुई बालू की बनी है। हे मनुष्य! तू करुणा की लहर बनकर ऐसे संसार में बह निकला है।

विशेषः- 1. कवि ने मनुष्य के जीवन को संसार के दुखों में के रूप में चित्रण किया है।

2. इस कविता में कवि ने मनुष्य के जीवन को इस संसार में जलने तथा दुःखों का वर्णन किया है।

3. भाषा- लालित्यपूर्ण हिन्दी खड़ी बोली।

4. शैली- प्रश्नात्मक शैली।

5. अलंकार-अनुप्रास अलंकार।

6. रस- करुण रस।

7. छंद- मुक्तक छंद।

8. सम्पूर्ण पद में पदमैत्री है।

अशोक की चिंता

प्र.01. असोक की चिंता कविता के कवि का नाम लिखिए।

उ.01. जयशंकर प्रसाद।

प्र.02. कविता के अनुसार जीवन किसके समान है?

उ.02. पतंगे के समान।

प्र.03. कविता के अनुसार रक्तिम यौवन कौन दिखलाती है?

उ.03. तृणा और अग्निशिखा।

प्र.04. किसके मन में जलकर झुलसने की उमंग उठती है?

उ.04. जीवनरूपी पतंगों के मन में।

प्र.05. किसका मस्तिष्क स्वाभिमान से उँचा है?

उ.05. मगध राज्य (सम्राट अशोक) का।

प्र.06. कौन पराजित होकर पैरों में पड़ा है?

उ.06. शत्रु (कलिंग राज्य)।

प्र.07. किसका विजयी अभियान भंग हो रहा है?

उ.07. सम्राट अशोक का।

प्र.08. किसका मस्तक नत हुआ?

उ.08. कलिंग राज्य का।

प्र.09. सम्राट अशोक किसके हृदय को नहीं जीत सका?

उ.09. कलिंग राज्य की प्रजा के हृदय को।

प्र.10. कवि के अनुसार किस पर शासन करना न्यायसंगत नहीं है?

उ.10. मानव मन पर।

प्र.11. कवि के अनुसार दो दिन का क्या है?

उ.11. घटा के कारण छाया हुआ अंधकार।

प्र.12. कवि के अनुसार किसका प्रसंग पुनः प्रकाशित होगा?

उ.12. रवि (सूर्य) और शशि (चन्द्रमा)।

प्र.13. कवि के अनुसार अशोक को किसका अनुभव होता है?

उ.13. आत्मिकग्लानि का।

प्र.14. कवि के अनुसार कौन युद्धभूमि में महाभीषण रव कर चुका है?

उ.14. झूठे गर्व से भरा हुआ दानव।

प्र.15. कवि के अनुसार मानव को क्या छोड़ देना चाहिए?

उ.15. दानवी प्रवृत्ति को।

प्र.16. कवि के अनुसार युद्ध में क्या कुढंग है?

उ.16. विजय और पराजय का।

प्र.17. कवि के अनुसार कौन गीत सुनाती है?

उ.17. नश्वरता।

प्र.18. कवि के अनुसार युद्धभूमि में किसका थिरकना बंद हो जाता है?

उ.18. अश्वों (घोड़ों) का।

प्र.19. कवि के अनुसार यह संसार किसके समान है?

उ.19. मधुशाला के समान।

प्र.20. कवि के अनुसार यह जग कब पागल होता है?

उ.20. वैभव (सम्पन्नता) को पाकर।

प्र.21. कवि के अनुसार मनुष्य क्यों फँसता हैं?

उ.21. काली-काली अलकों (मदिरापान में), आलस और मद में, मणि और मोती की झलक में

और क्षणिक सुखों की लालसा में।

प्र.22. कवि के अनुसार क्या बिजली के समान क्षणिक है?

उ.22. आकाश में (जीवन में आने वाला सुख-दुख)।

प्र.23. कवि के अनुसार नया मिलन किसे जन्म देता है?

उ.23. चिर विरह को।

प्र.24. कवि के अनुसार यह संसार किसका वन है?

उ.24. मरु-परीचिका का।

प्र.25. कवि के अनुसार मन की शांति कहाँ नहीं मिलती है?

उ.25. संसार में।

प्र.26. कवि के अनुसार कौन अपने दृगांचल भर रही है?

उ.26. समय की सरिता।

प्र.27. कवि के अनुसार कौन कभी खाली नहीं जाता है?

उ.27. काल का निषंग (समयचक्र का तरकस)।

प्र.28. कवि के अनुसार कौन वेदना के कारण व्याकुल है?

उ.28. यह चेतना (चेतन प्राणी)।

प्र.29. कवि के अनुसार कौन इस संसार में अपनी गाथा गाती है?

उ.29. करूणा।

प्र.30. कवि के अनुसार कौन इस संसार में पीड़ित रहता है?

उ.30. जड़ (अज्ञानी प्राणी)।

प्र.31. कवि के अनुसार कौन उदास होकर उदित होती है?

उ.31. ऊषा।

प्र.32. कवि के अनुसार संध्या का रंग किसके समान होता है?

उ.32. मधु के समान पीला।

प्र.33. कवि के अनुसार दृग पुतली कब प्रसन्न होकर गृत्य करती है?

उ.33. आलोक किरणों (सूर्य की किरणों) के आगमन पर।

प्र.34. कवि के अनुसार पक्षी कब कलरव करते हुए सो जाते हैं?

उ.34. संध्या काल के बाद।

प्र.35. कवि के अनुसार किसमें इतनी चमक होना निरर्थक है?

उ.35. जीवनरूपी फूलों में।

प्र.36. कवि के अनुसार संसार में क्या अस्थिर और अनिश्चित होता है?

उ.36. जीव (प्राणी) का आवागमन।

प्र.37. कवि के अनुसार इस मार्ग में क्या बिखेर देना चाहिए है?

उ.37. मृदुदल (सुख-शांति)।

प्र.38. कवि के अनुसार भृंग (भौंरे) क्या कर चुके है?

उ.38. मधुर मधु का पान।

प्र.39. कवि के अनुसार यह धरती किसमें जल रही है?

उ.39. संसार की ज्वाला में।

प्र.40. कवि के अनुसार इस संसार में क्या बिछे हुए है?

उ.40. प्रत्येक पग पर दुःख के काँटे।

प्र.41. कवि के अनुसार इस संसार की राह कैसी बनी हुई है?

उ.41. जलती हुई बालू के समान।

प्र.42. कवि के अनुसार इस कविता में मनुष्य को कैसे बहने की सलाह दी है?

उ.42. करूणा की लहर के रूप में।